International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in December 2021, iajesm2014@gmail.com

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा

Jaipal Arya, Research Scholar, Department of Education, Glocal University, Mirzapur, Saharanpur (U.P.)
Dr. Vikesh Kamra, Professor, Department of Education, Glocal University, Mirzapur, Saharanpur (U.P.)

प्रस्तावना

शिक्षा मानव मन के अंधकार को मिटाकर उसके अन्तर्मन को प्रकाशित करती है। उसी प्रकार से मनुष्य को एक विशेष दृष्टि मिलती है उसी दिशा को जीवन की ज्योति भी कहा जाता है जो हमें सांसारिक सच से रूबरू करती है। यह जीवन शिक्षा से ही संभव है।

शिक्षा मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की वाहक है, जो किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास की दिशा को निर्धारित करती है। परिवर्तन एक शाश्वत प्रक्रिया है, यह परिस्थिति जन्य है जो समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। अतः शिक्षा भी युग व कालें के अनुसार विभिन्न सोपानों को पार करते हुए वर्तमान स्थिति तक पहुँची है। पुरातन से लेकर भूमण्डलीकरण के दौर तक हम शिक्षा को विभिन्न रूपों में देख सकते हैं। मानव के प्राचीनकाल व आरम्भिक जीवन की शिक्षा व्यवस्था क्या रही है? प्रमाणों के अभाव में इसे भली प्रकार से नहीं समझा जा सकता है। जब से हमें इंसान के विकास के इतिहास के पुष्ट प्रमाण मिले हैं, तब से हम उसकी शिक्षा व्यवस्था व परिस्थितियों को भली प्रकार से समझ सकते हैं। व्यक्ति के प्रारम्भ से लेकर आजतक समाज व सत्ता के अनेक रूप देखने को मिल रहे है, इन सभी ने शिक्षा को अपने ढंग से प्रभावित किया है। भारतीय सन्दर्भ में अगर हम शिक्षा और उसके विभिन्न अकादमिक वातावरण को देखें, तो प्राचीन समय को स्वर्णिम युग कहा जा सकता है।

परावर्ती प्रचलन, शिक्षक शिक्षा का केन्द्रीय लक्ष्य :

उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के इस दौर में शिक्षा आम गरीब लोगों की पहुंच से बाहर होती जा रही है। बजट में अपर्याप्त प्रावधानों के चलते सरकारी शिक्षा संस्थानों की हालत बेहतर नहीं हो पा रही है। हाल ही के वर्षों में दो प्रकार की प्रणालियां समानान्तर चलती रही है – एक अत्यन्त न्यून फीस वाले सरकारी शिक्षण संस्थान तो दूसरे भारी फीस वाले निजी शिक्षण संस्थान। परिणामस्वरूप शिक्षा में एक आश्चर्यजनक असमानता देखने को मिल रही है जिसे समान लाने के लिए सरकार प्राथमिक शिक्षा को छोड़कर शेष सभी स्तर की शिक्षा व्यवस्था में सार्वजनिक–निजी साझेदारी मॉडल को लागू कर रही है जिसे पीपीपी मॉडल के नाम से जाना जाता है।

सार्वजनिक–निजी साझेदारी मॉडल का तात्पर्य है कि एक शिक्षण संस्थान जो इस स्थिति खुलेंगे, यह न्युनतम लाभ के उद्देश्य से एक साथ कार्य करेंगे। पीपीपी मॉडल की नीति बनाने वाले निर्माताओं द्वारा यह कहा जा रहा है कि इस प्रकार के शिक्षण संस्थान ज्यादा कुशल होंगे और इससे शिक्षा की लागत कम होगी।

साहित्य का अध्ययन

आर. का। सैंडिल्या (2008) राजस्थान के सहायक स्तर पर विद्यालयों के शैक्षणिक वातावरण पर ध्यान केन्द्रित किया और पाया कि प्रशिक्षकों को अपने छात्रों को संयोग से विद्वतापूर्ण और कुशल पाठ्यक्रम और दिशा प्रदान करनी चाहिए। छात्र के व्यावहारिक प्रगति के आसपास केन्द्रित करें। लकी एजुकेशनल मेथडोलॉजी बनानी चाहिए। छात्रों को विद्वानों के साथ–साथ सह–शिक्षाप्रद गतिविधियों के लिए सीमित करें। तैयारी में यशपाल, गांगुली, श्रीमाली, कोठारी, मुदलियार, नियामक आयोग की सिफारिशों को अमल में लाना तय है। विद्यालय में उपयुक्त वास्तविक साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

एस. का. प्रधान (2009) परीक्षा के संबंध में अकादमिक कर्मचारी अभिविन्यास योजना, इसके विकास, संबद्धता, योजना, शिक्षाप्रद आंदोलन और मूल्यांकन की चल रही स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया और पाया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की शैक्षणिक कर्मचारी अभिविन्यास योजना का मार्ग सुखद नहीं था। समझदार कर्मचारी स्कूल की आर्थिक स्थिति ठीक थी फिर भी मालिक संपत्ति की नियुक्ति को लेकर परेशान थे। जैसा कि हो सकता है, व्यावसायिक कर्मचारी, विभिन्न संपत्तियों की कुल बड़ी संख्या के पाठ्यक्रमों को व्यक्तियों द्वारा प्रासंगिक के रूप में देखा गया था। व्यवस्था की लंबाई मालिकों और उनके सहयोगियों द्वारा पर्याप्त के रूप में देखी गई थी।

एच. उर्मिला (2011) शिक्षार्थी को दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रम विद्यालय प्रसार को कक्षास्तर के अनुसार दिखाए जाने चाहिए। शिक्षकों को बालकों की अध्ययन आदतों का ध्यान रखना चाहिए एवं समस्याओं को दूर करना चाहिए

विश्वलाल पारीक (2012) शासकीय एवं अशासकीय उच्च विवेकाधीन विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक परीक्षण किया गया और पाया गया कि विद्यालय के वातावरण को सकारात्मक बनाने में केन्द्र का बहुत बड़ा प्रभाव है, अतरू सर्वांगीण की प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए विद्यालय के वातावरण को सकारात्मक बनाया जाना चाहिए। युवा व्यक्ति की प्रगति। विद्वान व्यक्ति, सह–शैक्षिक और स्कूली वातावरण के वास्तविक घटकों का निरंतर मूल्यांकन करने के बाद, इसे अपनी क्षमता के अनुसार अतिरिक्त रूप से

बढ़ावा देने का प्रयास किया जाना चाहिए। विद्यालय में प्रदर्शन कार्य को पूर्णकालिक, गुणवत्तापूर्ण और लगन से बच्चों की उपलब्धि का विस्तार करना चाहिए। व्यावहारिक गतिविधियों के अलावा, सह–शिक्षाप्रद गतिविधियों के लिए मानक और स्तर के उपक्रम बनाए जाने चाहिए। स्कूल में एक बड़ा हिस्सा नियम और मनभावन वातावरण फैलाया जाना चाहिए। पारंपरिक पत्राचार को प्रशिक्षकों, छात्रों और द्वारपालों के साथ फैलाया जाना चाहिए। उन सभी की सर्वाधिक उल्लेखनीय सहायता कार्यक्रमों में सुनिश्चित की जानी चाहिए।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता

यह देखा एवं महसूस किया गया है कि जब बच्चों की परीक्षा ली जाती है तो कुछ बालक बेहतर प्रदर्शन कर अच्छे अंक प्राप्त करते हैं। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनके अंक औसत से भी कम होते हैं। कम अंक प्राप्त करने वाले शिक्षार्थी का उनके सहपाठी मजाक उड़ाते हैं। बहुप्रायः ये छात्र अपने शिक्षकों एवं अभिभावकों की उपेक्षा का भी शिकार होते हैं। ये एक तरफ इनसे नाराज रहते हैं वहीं दूसरी तरफ हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। विद्यालय और परीक्षा बच्चों के लिए तनाव का कारण बन जाते हैं। ऐसे में बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति या तो अनियमित होती है अथवा वे ड्रॉप आउट हो जाते हैं। ये स्थितियाँ हमारे बच्चों और समाज के लिए कतई उचित नहीं है।

शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता

किसी भी समाज में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तीन मुख्य घटक हैं – छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक। माता–पिता एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटक है जो न केवल नामांकन एवं ठहराव के लक्ष्य की प्राप्ति में उपयोगी भूमिका का निर्वहन कर सकता है, वरन शिक्षा की गुणात्मकता में भी योगदान दे सकता है। विद्यालय के उत्तरदायित्व में सामाजिक उत्थान को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। समाज विद्यालय की स्थापना करता है। विद्यालय समाज का प्राण और संस्कृति के प्रमुख केन्द्र है। विद्यालय, समाज का एक अविभाज्य अंग है। स्कुल की वास्तविक सुन्दरता सबके लिए शिक्षा से है। सर्व शिक्षा विभिन्न आयामों की एक रामबाण औषधि है, इसमें सबकी भागीदारी और सबका परस्पर सहयोग रहा व कार्य में दक्षता रही तो एक दिन फिर हमारा भारत जगद्गुरु कहलाएगा। कोई भी कार्य लोगों की भागीदारी के बगैर सफल नहीं हो सकता। विद्यालय के सामाजिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आवश्यक है, न कि उपेक्षावृत्ति। शिक्षा मानव जाति की साझा संपत्ति है।

शोध सांख्यिकी

समंक का अर्थ एवं परिभाषा

समंकों का संग्रहण अनुसंधान का एक महत्त्वपूर्ण चरण हैं एक सांख्यिक द्वारा अनुसंधान की योजना का निर्माण करने के बाद सबसे पहला कार्य समंकों के संग्रहण का किया जाता है। ''समंकों के संग्रहण से आशय अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली अध्ययन के विषय से सम्बद्ध इकाईयों द्वारा उद्देश्यपूर्ण सूचनाओं का एकत्रीकरण है।''

प्राथमिक और द्वितीयक समंक

1. प्राथमिक समंक :

अनुसंधान द्वारा अपने प्रयोग के लिए नये सिरे से पहली बार आरम्भ से अन्त तक एड किये गये समंक प्राथमिक या मौलिक समंक कहलाते हैं। ये कच्चे माल के समान होते हैं। उदाहरणार्थ : किसी नये उत्पाद के जारी करने से पहले उसकी मांग के सम्बन्ध में पहली बार सूचनाएं एकत्र करें तो यह संकलित समंक प्राथमिक समंक कहलाता है।

2. द्वितीयक समंक :

वे समंक जिनका पूर्व में अन्य किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा संकलन किया जा चुका हो, द्वितीयक समंक कहलाते हैं। अन्य शब्दों में यदि पूर्व में किसी अनुसन्धानकर्ता ने कोई समंक एडीफत किये थे

राजस्थान का शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं भौतिक आयाम

तत्कालीन प्रत्येक देशी रियासतों में शैक्षिक प्रशासन व विस्तार की स्थितियाँ भिन्न–भिन्न थी उनमें एकरूपता लाने के लिए राष्ट्र स्तर पर सन् 2017 में शिक्षा संहिता का प्रकाशन हुआ और अनेक आयोग गठित हुए और अकादमिक वतावरण को सुधारने का प्रयास किया गया। 2016 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्धारण एवं भारतीय संविधान के 73 एवं 74 वे संशोधन से अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय हुए। शिक्षा का ढ़ाचा परिवर्तित होकर 10+2 के स्वरूप में सामने आया। कक्षा 9 व 10 के पाठ्यक्रम से विभिन्न विषय संकायों को हटाकर उन्हें समान रूप प्रदान किया गया। गौरतलब है कि कक्षा 9 से 12 कक्षाओं के अध्ययन के लिए गठित विद्यालयों को उच्च माध्यमिक विद्यालय कहा जाता हैं सार्वजननीय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन हेतु सन् 2000 से सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से 2010 तक सभी बच्चों को शिक्षित करने का प्रावधान है ताकि वे माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा भी प्राप्त कर सके।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया,

''यह विधि छोटे एवं बड़े दोनों समूहों का अध्ययन करती है इसके द्वारा सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक चरो का वितरण एवं व्याख्या की जा सकती है।'' प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। यह विधि वर्तमान परिस्थितियों के महत्वपूर्ण पक्षों का अध्ययन करती है और अध्ययन के बाद विश्लेषण करके क्षेत्र के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।

सर्वेक्षण विधि की आवश्यकता एवं महत्व

इस विधि द्वारा वर्तमान से संबंधित समस्याओं को शोधकर्ता के समक्ष प्रस्तुत हुआ।

सर्वेक्षण विधि की विशेषताएं

1. यह विधि मुख्यतः क्या विधमान है की जानकारी करवाती है एवं इससे अपेक्षाकृत अधिक संख्या में एकत्र किए जाते हैं।
2. यह विधि किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित न होकर जनसमूह से संबंधित होती है साथ ही इसका संबंध व्यक्ति की विशेषताओं से न होकर पूर्ण जनसंख्या या उसके न्यादर्श की सामान्यीकृत सांख्यिकी से होता है।
3. वर्तमान से संबंधित इस विधि द्वारा सर्वेक्षण गुणात्मक व संख्यात्मक दोनों ही प्रकार से प्रयुक्त किया जा सकता है तथा इससे स्पष्ट रूप से निश्चित उद्देश्य प्राप्त होते हैं।

सकंलन, वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण

सहशैक्षिक गतिविधि के मध्यमान के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

सारणी संख्या

क्र.सं.	चर	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर	
						0.05	0.01
1	शहरी गैर सरकारी विद्यालय	160	86.70	8.08	0.77	X	X
2	ग्रामीण सरकारी विद्यालय	160	85.93	9.79			

डीफ318 टेबल वैल्यू 1.96 – 2.57

सहशैक्षिक गतिविधि के मध्यमान के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

आरेख संख्या

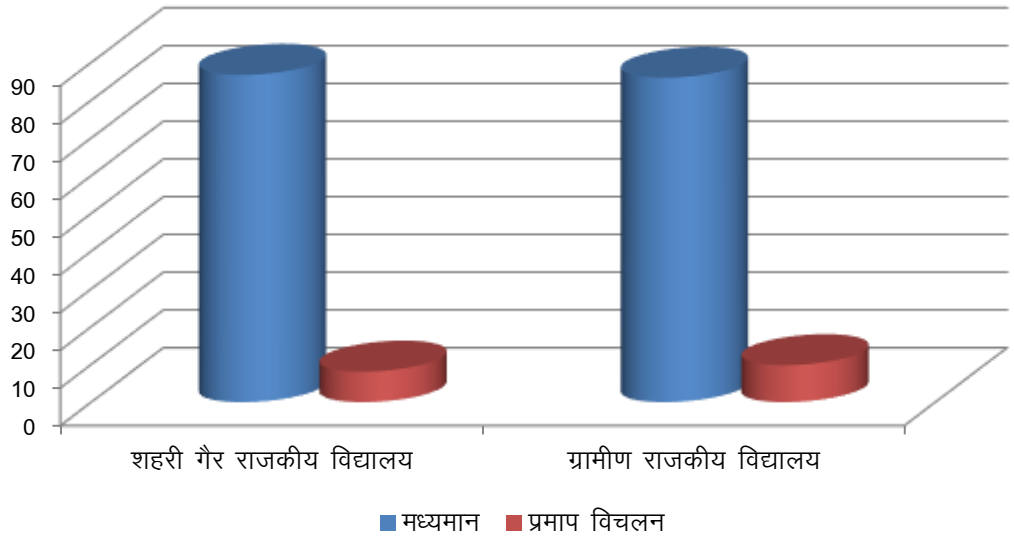

शोध निष्कर्ष का औचित्य

शोधकर्त्ता ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि शोध उसकी व्यक्तिगत धारणाएं, कल्पनाएं, छोटे अनुमान एवं किसी प्रकार की अभिनति का किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं पड़े। प्रस्तुत शोध कार्य में इस बात का ध्यान रखा गया है कि जो भी निष्कर्ष सामने आये है वे शिक्षक, शिक्षार्थी एवं प्रधानाध्यापक द्वारा दिए गए उत्तरों के विश्लेषण एवं व्याख्या से प्राप्त हुए।

समाहार

''यह कटू सत्य है कि अपने अस्तित्व की रक्षा करने और दूसरों से आगे निकलने की होड़ में न सिर्फ समाज अपितु परिवार भी अपनी जड़ों से विमुख होता जा रहा है। आज माता–पिता व परिवार के सदस्यों के पास अपने बालक के लिए समय नहीं है। दूसरी ओर विद्यालय से मिले गृहकार्य, ट्यूशन तथा सोशल मीडिया में व्यस्त रहने वाले बालक के पास भी अपने माता–पिता एवं परिवार के साथ बिताने के लिए समय नहीं है। सामाजिकता पर हावी अनावश्यक व्यवस्तता से मूल्यों, नैतिकता परम्परा और पारिवारिक संबंधों का भी ह्रास होता जा रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आलोक (2006). सहारा समय. वर्गों में बटी शिक्षा. प्राईमरी शिक्षक. नई दिल्ली : नेशनल काउसिल ऑफ एज्युकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग. पृ. 41.
2. बेस्ट जे डब्ल्यू (2017). शिक्षा में अनुसंधान. पब्लिक हाऊस. नई दिल्ली.
3. वेणु सदगोपाल (2005). हमारी शिक्षा नीति और हमारे स्कूल. जयपुर : दिगंत्तर संस्थान. पृ. 20.
4. चौहान एम.एल. (2009), शिक्षा का अधिकार, नई शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका, जयपुर
5. डी, कॉक. (2006). माध्यमिक शिक्षा में नवीन अधिनगम और अधिगम वातावरणों का अध्ययन, रिव्यु ऑफ एज्युकेशन रिसर्च 74(2) सित. 2004 पेज 141–170.
6. गाँधी, के.ए. (2015). संगठनात्मक विरोध और विद्यालयों के परिणामों पर प्रबंधन व्यवस्था का प्रभाव, शिक्षा में प्रयोग वोल्यूमगग111(4) 67–74.
7. एम. फारूकी (2016). शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों का अध्ययन। दियान विश्वविद्यालय, दिया, इथोपिया.
8. एमवे जोहेना (2017). विद्यार्थियों की जीवन शैली का शिक्षा पर प्रभाव। ऑक्सफोर्ड एविडेन्स, युनाइटेड किगंडम।
9. कृष्णन, एस. (2009) विद्यालय का संगठनात्मक वातावरणः एक अध्ययन शिक्षा की उन्नति वोल्यूम स्ग(6) 131–133.
10. नीलिमा, औसकर. (2015). सरकारी और व्यक्तिगत माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के बीच कार्य (व्यवसाय) संतुष्टि का अध्ययन, शिक्षा की उन्नति वोल्यूम स्ग्प) (3) 50–53.
11. ओ. पी. विजय (2014) सहशिक्षा एवं गैर सहशिक्षा विद्यालयोंमें अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का अध्ययन, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
12. पीटरसन (2008) कक्षा कक्ष एक मंच के रूप में और अध्यापक की भूमिका शिक्षण और
13. अध्यापक शिक्षा 20 (6) अगस्त 2004 पेज 589–605.
14. बेस्ट जे डब्ल्यू (2017). शिक्षा में अनुसंधान. पब्लिक हाऊस. नई दिल्ली.